भारतीय वैश्विक परिषद

समाचार पत्रक

अंक : 38 | जुलाई–सितंबर, 2024

वियतनाम समाजवादी गणराज्य के माननीय प्रधान मंत्री महामहिम फाम मिन्ह चीन्ह द्वारा 49वाँ सप्रू हाउस व्याख्यान, 1 अगस्त 2024

मलेशिया के प्रधान मंत्री, माननीय दातो' सेरी अनवर बिन इब्राहिम द्वारा 50वाँ सप्रू हाउस व्याख्यान, 20 अगस्त 2024

"भविष्य पर संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन" पर पूर्वावलोकन संगोष्ठी, 19 सितंबर 2024

फिलीपींस की पूर्व विदेश सचिव (विदेश मंत्री) मैडम डेलिया डोमिंगो अल्बर्ट द्वारा भाषण, 6 सितंबर 2024

विषय-सूची

आईसीडब्ल्यूए के वरिष्ठ शोध अध्येता डॉ. संजीव कुमार द्वारा सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) पर चर्चा, 04 जुलाई 2024 4

रैंड कॉर्पोरेशन के एशिया पैसिफिक पॉलिसी सेंटर (सीएपीपी) के निदेशक डॉ रफीक दोसानी ने आईसीडब्ल्यूए के महानिदेशक विजय ठाकुर सिंह से मुलाकात की, 05 जुलाई 2024 4

मैक्सिको विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय संबंध केंद्र में भारत पर सहायक प्रोफेसर डॉ. जैकोबो सिल्वा पराडा के साथ बातचीत, 9 जुलाई 2024 5

वियतनाम समाजवादी गणराज्य के माननीय प्रधान मंत्री महामहिम फाम मिन्ह चीन्ह द्वारा 49वाँ सप्रू हाउस व्याख्यान, 1 अगस्त 2024 5

एक्सएलआरआई दिल्ली एनसीआर, झज्जर, हरियाणा द्वारा प्रश्नोत्तरी, 3 अगस्त 2024 7

सीएससीएपी बैठक, एशिया-प्रशांत में अप्रसार और निरस्त्रीकरण पर सीएससीएपी अध्ययन समूह की 11वीं बैठक, बैंकॉक, 5-6 अगस्त 2024 7

भारत में फिलीपींस के राजदूत महामहिम जोसेल एफ. इग्नासियो ने आईसीडब्ल्यूए के अपर सचिव नूतन कपूर महावर से मुलाकात की, 13 अगस्त 2024 8

मलेशिया के प्रधान मंत्री माननीय दातो' सेरी अनवर बिन इब्राहिम द्वारा 50वाँ सप्रू हाउस व्याख्यान, 20 अगस्त 2024 8

फिलीपींस की पूर्व विदेश सचिव मैडम डेलिया डोमिंगो अल्बर्ट का भाषण, 06 सितंबर, 2024 9

भारत-यूरोपीय संघ सीएएमएम II के तहत छात्र गतिशीलता पर कार्यशाला, 10 सितंबर 2024 10

नई दिल्ली में रूसी हाउस की प्रमुख और निदेशक डॉ. एलेना रेमीज़ोवा और मुंबई में रूसी हाउस के आगामी प्रमुख विक्टर गोरेलिख ने आईसीडब्ल्यूए के अपर सचिव से मुलाकात की, 12 सितंबर 2024 11

अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन संगठन (आईओएम) के विकास कोष की प्रशासक एलेसिया कास्टेलफ्रैंको ने आईसीडब्ल्यूए के अपर सचिव से मुलाकात की, 12 सितंबर 2024 11

हिंदी दिवस 2024, 14-15 सितंबर 2024 12

"भविष्य पर संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन" पर पूर्वावलोकन संगोष्ठी, 19 सितंबर 2024 12

आईसीडब्ल्यूए में हिंदी पखवाड़ा 2024, 26 सितंबर 2024 14

वियतनाम सामाजिक विज्ञान अकादमी (वीएएसएस), हनोई, वियतनाम और भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए) के बीच पाँचवीं वार्ता, 27 सितंबर 2024 14

आउटरीच कार्यक्रम 16

आईसीडब्ल्यूए में शोध-प्रशिक्षु 17

प्रकाशन 19

इंडिया क्वार्टरली - संपादकीय 23

आईसीडब्ल्यूए के वरिष्ठ शोध अध्येता डॉ. संजीव कुमार द्वारा सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) पर चर्चा, 04 जुलाई 2024

वरिष्ठ शोध अध्येता डॉ. संजीव कुमार द्वारा लिखित "चीन की अपने पड़ोस के प्रति विदेश नीति: माओत्से तुंग से शी जिनपिंग तक मार्गदर्शक सिद्धांतों का प्रक्षेप पथ" शीर्षक वाले सप्रू हाउस पेपर (एसएचपी) पर चर्चा 04 जुलाई, 2024 को आयोजित की गई।

बैठक की अध्यक्षता चीन में भारत के पूर्व राजदूत, राजदूत गौतम बंबावाले ने की। उन्होंने एसएचपी के विषय के चयन की सराहना की और पेपर के महत्व पर प्रकाश डाला।

यह पेपर 1949 से ले कर अपने पड़ोस के प्रति चीनी विदेश नीति के मार्गदर्शक सिद्धांतों का विश्लेषण करता है। यह पेपर पाँच खंडों में विभाजित है, जिनमें से प्रत्येक में क्रमशः माओत्से तुंग, डेंग शियाओपिंग, जियांग जेमिन, हू जिंताओ और शी जिनपिंग के शासनकाल में अपने पड़ोसियों के प्रति चीन की नीति की जाँच की गई है।

चर्चा में शामिल दो व्यक्ति थे - प्रोफेसर अविनाश गोडबोले, चीनी अध्ययन एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग, ओ पी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी, सोनीपत, और डॉ राजीव रंजन, एसोसिएट प्रोफेसर, पूर्वी एशियाई अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय।

रैंड कॉर्पोरेशन के एशिया पैसिफिक पॉलिसी सेंटर (सीएपीपी) के निदेशक डॉ रफीक दोसानी ने आईसीडब्ल्यूए के महानिदेशक विजय ठाकुर सिंह से मुलाकात की, 05 जुलाई 2024

रैंड कॉर्पोरेशन के एशिया पैसिफिक पॉलिसी सेंटर (सीएपीपी) के निदेशक डॉ. रफीक दोसानी ने अकादमिक और अनुसंधान सहयोग पर चर्चा करने के लिए आईसीडब्ल्यूए के महानिदेशक राजदूत विजय ठाकुर सिंह से मुलाकात की।

मैक्सिको विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय संबंध केंद्र में भारत पर सहायक प्रोफेसर डॉ. जैकोबो सिल्वा पराडा के साथ बातचीत, 9 जुलाई 2024

आईसीडब्ल्यूए अनुसंधान संकाय ने सप्रू हाउस में मैक्सिको विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय संबंध केंद्र के डॉ. जैकोबो सिल्वा पराडा के साथ बातचीत की। डॉ. जैकोबो सिल्वा पराडा ने "मैक्सिकन राजनीति और भारत-मैक्सिको संबंध" विषय पर व्याख्यान दिया। व्याख्यान के बाद प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया। इस परिचर्चा की अध्यक्षता आईसीडब्ल्यूए की निदेशक (अनुसंधान) डॉ. निवेदिता रे ने की।

वियतनाम समाजवादी गणराज्य के माननीय प्रधान मंत्री महामहिम फाम मिन्ह चीन्ह द्वारा 49वाँ सप्रू हाउस व्याख्यान, 1 अगस्त 2024

49वाँ सप्रू हाउस व्याख्यान वियतनाम के प्रधानमंत्री महामहिम फाम मिन्ह चीन्ह द्वारा दिया गया। भारतीय वैश्विक परिषद के कार्यवाहक महानिदेशक, राजदूत सौमेन बागची ने स्वागत भाषण दिया। वियतनाम भारत की एक्ट ईस्ट नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और भारत के हिंद-प्रशांत दृष्टिकोण में एक प्रमुख साझेदार है। 2022 में भारत ने राजनयिक संबंध स्थापना की 50 वीं वर्षगाँठ मनाई। वर्ष 2016 में द्विपक्षीय संबंधों को व्यापक रणनीतिक साझेदारी तक बढ़ाया गया।

राजनीतिक और सुरक्षा साझेदारों के रूप में, एक बहुध्रुवीय और पुनर्संतुलित विश्व में भारत और वियतनाम के हित समान हैं। भारत ने एक-दूसरे के उद्देश्यों का समर्थन किया है, चाहे वह आसियान के नेतृत्व वाले मंचों पर हो या वैश्विक मंचों पर। यूएनसीएलओएस 1982 सहित अंतर्राष्ट्रीय कानून तथा नियम-आधारित व्यवस्था के प्रति हमारा साझा सम्मान एक मजबूत समानता है। ये समान विशेषताएँ हमें आने वाले वर्षों में बहुध्रुवीय एशिया की नींव बनने की ओर बढाती हैं। अपने भाषण में प्रधानमंत्री फाम मिन्ह चीन्ह ने पार्टी महासचिव गुयेन फू ट्रोंग के निधन पर भारत द्वारा भेजे गए संदेशों के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया। प्रधानमंत्री फाम मिन्ह चीन्ह ने गंगा सभ्यता की महान उपलब्धियों और आज भारत के उल्लेखनीय विकास पर अपने विचार व्यक्त किए।

वैश्विक स्थिति के संबंध में वियतनामी नेता ने कहा कि विश्व में अभी भी जटिलताएँ और अनिश्चितताएँ बढ़ रही हैं तथा कई अभूतपूर्व मुद्दे उभर रहे हैं। प्रधानमंत्री के अनुसार, आज की वैश्विक स्थिति में तीव्र और जटिल उतार-चढ़ाव चार प्रमुख पहलुओं में परिलक्षित होते हैं। प्रथम, वैश्विक सुरक्षा परिवेश की अनिश्चितता और अस्थिरता उच्च स्तर पर बनी हुई है, साथ ही स्थानीय संघर्षों में जटिलता बढ़ रही है तथा सैन्यीकरण की प्रवृत्ति बढ़ रही है। दूसरा, वैश्विक अर्थव्यवस्था एक नए विकास चक्र में प्रवेश कर चुकी है, लेकिन उसे अभी भी कई जोखिमों का सामना करना पड़ रहा है। तीसरा, बहुपक्षवाद अभी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, फिर भी इसकी प्रभावशीलता को गंभीर चुनौती मिल रही है। चौथा, 21वीं सदी हिंद महासागर-एशिया-प्रशांत क्षेत्रों की सदी है, जो, हालाँकि, हॉट स्पॉट, स्थानीय संघर्षों और शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा से महत्वपूर्ण जोखिमों और चुनौतियों का भी सामना कर रही है। वैश्विक मुद्दों के लिए एक व्यापक मानसिकता की आवश्यकता है, जिसके लिए सभी देशों और बहुपक्षीय संस्थाओं को एकजुटता और विविधता में एकता की भावना के साथ प्रभावी, समावेशी और वैश्विक समाधान खोजने के लिए पहले से कहीं अधिक संवाद और सहयोग जारी रखने की आवश्यकता है।

वियतनाम की स्थिति के बारे में प्रधानमंत्री चीन्ह ने कहा कि लगभग 40 वर्षों की नवीकरण (दोई मोई) प्रक्रिया के बाद, वियतनाम ने अपने सुधार पथ के लिए एक सैद्धांतिक रूपरेखा विकसित की है, जो समाजवाद और समाजवाद की ओर जाने वाले मार्ग के बारे में वियतनाम की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीवी) और वियतनामी लोगों की जागरूकता, इच्छा और आकांक्षाओं के क्रिस्टलीकरण का प्रतिनिधित्व करती है। प्रधान मंत्री फाम मिन्ह चीन्ह ने पुष्टि की कि वास्तव में ये उपलब्धियाँ वियतनाम की नीतियों और दृष्टिकोणों की सत्यता को प्रमाणित करती हैं, जो तीन मुख्य स्तंभों पर आधारित हैं: समाजवादी लोकतंत्र, समाजवादी कानून-शासन वाला राज्य और समाजवादी-उन्मुख बाजार अर्थव्यवस्था, जिसमें राजनीतिक और सामाजिक स्थिरता बनाए रखने पर आधारशिला रखी गई हो, लोगों को विकास का केन्द्र, विषय, लक्ष्य, प्रेरक शक्ति और सबसे महत्वपूर्ण संसाधन मानना तथा मात्र आर्थिक विकास के लिए प्रगति, सामाजिक समानता और पर्यावरण संरक्षण की बलि नहीं चढ़ाना।

प्रधानमंत्री फाम मिन्ह चीन्ह ने कहा कि घेराबंदी और प्रतिबंध के अधीन रहने वाले देश वियतनाम के अब 193 देशों के साथ राजनयिक संबंध हैं, जिनमें 30 से अधिक व्यापक साझेदार और रणनीतिक साझेदार शामिल हैं। वियतनाम लगभग 70 वैश्विक और क्षेत्रीय संगठनों का एक सक्रिय और जिम्मेदार सदस्य भी है।

2030 तक वियतनाम को आधुनिक उद्योग और उच्च मध्यम आय वाले विकासशील देश में तथा 2045 तक उच्च आय वाले विकसित राष्ट्र में बदलने के प्रयास में, वियतनाम व्यापक आर्थिक स्थिरता बनाए रखने, मुद्रास्फीति को प्रबंधित करने, विकास को बढ़ावा देने और प्रमुख आर्थिक संतुलन सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। यह औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण को आगे बढ़ा रहा है और अर्थव्यवस्था का पुनर्गठन कर रहा है, पारंपरिक विकास तंत्रों को नवीनीकृत करते हुए नए तंत्रों को बढ़ावा दे रहा है, आंतरिक और बाह्य दोनों संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग कर रहा है, सामाजिक कल्याण सुनिश्चित कर रहा है, पर्यावरण संरक्षण और जलवायु परिवर्तन अनुकूलन, राष्ट्रीय

रक्षा-सुरक्षा को मजबूत कर रहा है और राष्ट्रीय विकास के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के लिए बाह्य संबंधों और वैश्विक एकीकरण को बढ़ावा दे रहा है।

विश्व में हो रहे घटनाक्रमों के बीच, वियतनाम और भारत को अपनी मित्रता और एकजुटता की परंपरा को दृढ़ता से कायम रखना चाहिए तथा साथ मिलकर नए रणनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपने प्रभावी सहयोग को बढ़ाना चाहिए।

एक्सएलआरआई दिल्ली एनसीआर, झज्जर, हरियाणा द्वारा प्रश्नोत्तरी, 3 अगस्त 2024

आईसीडब्ल्यूए-एक्सएलआरआई समझौता ज्ञापन के बाद, एक्सएलआरआई ने आईसीडब्ल्यूए के सहयोग से 03 अगस्त, 2024 को झज्जर में एक्सएलआरआई दिल्ली-एनसीआर परिसर में "भारतीय वाणिज्य पर भारत की विदेश नीति की बदलती गतिशीलता के प्रभाव" पर एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया। आईसीडब्ल्यूए के निदेशक श्री हितेश राजपाल ने मुख्य भाषण दिया। स्वागत भाषण एक्सएलआरआई दिल्ली-एनसीआर परिसर के निदेशक डॉ फादर केएस कैसिमिर एसजे ने दिया। एक्सएलआरआई के छात्रों ने उत्साहपूर्वक प्रश्नोत्तर प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

सीएससीएपी बैठक, एशिया-प्रशांत में अप्रसार और निरस्त्रीकरण पर सीएससीएपी अध्ययन समूह की 11वीं बैठक, बैंकॉक, 5-6 अगस्त 2024

एशिया प्रशांत क्षेत्र में अप्रसार और निरस्त्रीकरण पर 11वीं सीएससीएपी अध्ययन समूह की बैठक की सह-अध्यक्षता सीएससीएपी वियतनाम और सीएससीएपी यूएसए ने की। इसमें 21 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें युवा नेता कार्यक्रम के तीन सदस्य भी शामिल थे। बैठक के दौरान अध्ययन समूह के सदस्यों द्वारा परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) के तीन सिद्धांतों - (i) परमाणु अप्रसार, (ii) निरस्त्रीकरण और (iii) परमाणु ऊर्जा का शांतिपूर्ण उपयोग - पर चर्चा की गई। महाशक्तियों के बीच बढ़ती सामरिक प्रतिस्पर्धा के मद्देनजर रूस और उत्तर कोरिया तथा रूस-उत्तर कोरिया-ईरान और पाकिस्तान जैसे नए गठबंधनों के उदय पर चर्चा की गई। हथियार नियंत्रण तंत्र के पतन को एक चिंता के रूप में व्यक्त किया गया। सहयोग के क्षेत्र उभरे हैं, और इसमें मजबूत सुरक्षा और संरक्षा प्रणालियों के निर्माण में हितों का अभिसरण शामिल है, जिसमें कंप्यूटर सुरक्षा और परमाणु कमान और नियंत्रण से कृत्रिम बुद्धि को दूर रखना शामिल है। इस बात पर भी सहमति है कि इस क्षेत्र में परमाणु हथियार तैनात न किए जाएँ। चर्चा के विषय के संबंध में, संयुक्त राष्ट्र प्रस्ताव 1540 के समक्ष चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया। बैठक में उत्तर कोरिया पर संयुक्त राष्ट्र पैनल की समाप्ति के परिणामस्वरूप उभरे मुद्दों पर भी चर्चा की गई। यह बताया गया कि पैनल के बिना, संयुक्त राष्ट्र ने प्रतिबंधों के कार्यान्वयन और उल्लंघनों की निगरानी करने की अपनी क्षमता खो दी है। परमाणु सत्यापन में सहायता करने के साथ-साथ व्यवधान उत्पन्न करने में ड्रोन, एआई और छोटे उपग्रहों जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों की भूमिका पर प्रकाश डाला गया। नागरिक शक्ति के लिए परमाणु ऊर्जा का सकारात्मक पहलू एक सकारात्मक विकास था, और अध्ययन समूह ने निष्कर्ष निकाला कि इस पहलू में सहयोग को और अधिक प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है, विशेष रूप से परमाणु संलयन के विकास में। इस पर चर्चा करते हुए भारत की सकारात्मक भूमिका पर प्रकाश डाला गया।

भारत में फिलीपींस के राजदूत महामहिम जोसेल एफ. इग्नासियो ने आईसीडब्ल्यूए के अपर सचिव नूतन कपूर महावर से मुलाकात की, 13 अगस्त 2024

भारत में फिलीपींस के राजदूत महामहिम जोसेल एफ. इग्नासियो ने सहयोग बढ़ाने और आपसी हित के अन्य क्षेत्रों पर चर्चा करने के लिए आईसीडब्ल्यूए के अपर सचिव नूतन कपूर महावर से मुलाकात की।

मलेशिया के प्रधान मंत्री माननीय दातो' सेरी अनवर बिन इब्राहिम द्वारा 50वाँ सप्रू हाउस व्याख्यान, 20 अगस्त 2024

मलेशिया के प्रधानमंत्री माननीय दातो' सेरी अनवर बिन इब्राहिम द्वारा "उभरते वैश्विक दक्षिण की ओर: मलेशिया-भारत संबंधों का लाभ उठाना" विषय पर 50वाँ सप्रू हाउस व्याख्यान 20 अगस्त, 2024 को सप्रू हाउस में आयोजित किया गया। व्याख्यान की अध्यक्षता आईसीडब्ल्यूए के कार्यवाहक महानिदेशक (एडीजी) श्री सौमेन बागची ने की। व्याख्यान के बाद प्रश्नोत्तर सत्र हुआ।

50वें सप्रू हाउस व्याख्यान के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:

- वैश्विक दक्षिण उस आवाज को पुनः प्राप्त करने का प्रतिनिधित्व करता है जिसे उभरती हुई अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में अब और नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। वैश्विक समृद्धि के चालक के रूप में, वैश्विक दक्षिण आज विश्व सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 40% और विश्व की लगभग 85% आबादी का प्रतिनिधित्व करता है। 2030 तक, चार सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से तीन वैश्विक दक्षिण से होंगी - उनमें से एक भारत है। आलोचकों द्वारा अत्यधिक नकारात्मक अर्थों के बावजूद, वैश्विक दक्षिण का मतलब वैश्विक उत्तर को बाहर करना नहीं है।
- मलेशिया और भारत के बीच वर्तमान व्यापार 16.5 बिलियन डॉलर है, जो पिछले दो दशकों में 8.5% की प्रभावशाली चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ा है। यह विकास पथ महज एक आंकड़ा नहीं है, बल्कि मलेशिया-भारत व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता और आसियान-भारत मुक्त व्यापार समझौता जैसे ढांचों द्वारा सुगम बनाए गए गहन आर्थिक संबंधों का प्रमाण है।

- भारत और मलेशिया के लिए उच्च तकनीक क्षेत्र, उदाहरण के लिए सेमीकंडक्टर उद्योग में, एक-दूसरे की क्षमताओं का लाभ उठाने की काफी गुंजाइश है।
- आगामी आसियान अध्यक्ष के रूप में, मलेशिया न केवल मौजूदा आसियान तंत्रों और संस्थाओं को मजबूत बनाने और उन्हें उद्देश्य के अनुकूल बनाने पर ध्यान केंद्रित करेगा, बल्कि अन्य ढांचों के साथ तालमेल भी स्थापित करेगा जो क्षेत्रीय विकास और समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- हमें उन नकारात्मक लोगों को नकारना होगा जो यह तर्क देते हैं कि बहुसंस्कृतिवाद, समावेशिता और साझा समृद्धि केवल सुविधा की निर्मितियां हैं, जिनकी पूर्ति असंभव है, क्योंकि, जैसा कि वे कहते हैं, मनुष्य एक आर्थिक प्राणी है, जो आत्म-संरक्षण और आत्म-उन्नयन की प्रवृत्ति से प्रेरित होता है।

फिलीपींस की पूर्व विदेश सचिव मैडम डेलिया डोमिंगो अल्बर्ट का भाषण, 06 सितंबर 2024

आईसीडब्ल्यूए ने 6 सितंबर, 2024 को फिलीपींस की पूर्व विदेश सचिव (पूर्व विदेश मंत्री) मैडम डेलिया डोमिंगो अल्बर्ट द्वारा " आसियान में महिलाएँ, शांति और सुरक्षा" विषय पर एक वार्ता का आयोजन किया। कार्यक्रम में स्वागत भाषण आईसीडब्ल्यूए की एएस नूतन कपूर महावर ने दिया। उनके व्याख्यान के बाद प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मिशनों की महिला प्रमुखों, राजनयिक कोर के सदस्यों, लिंग और सुरक्षा अध्ययन के शिक्षाविदों और विशेषज्ञों तथा आईसीडब्ल्यूए के आंतरिक संकाय सदस्यों ने भाग लिया। स्वागत भाषण देते हुए, नूतन कपूर महावर, एएस, आईसीडब्ल्यूए ने मैडम डेलिया डोमिंगो अल्बर्ट का गर्मजोशी से स्वागत किया और उपस्थित लोगों को उनके शानदार करियर से परिचित कराया। इसके बाद, उन्होंने भारत और फिलीपींस के बीच "मैत्रीपूर्ण और समस्या-मुक्त संबंधों" पर संक्षेप में विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और कूटनीति के व्यापक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। आईसीडब्ल्यूए अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा और कूटनीति से संबंधित लिंग-संबंधी मुद्दों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

आईसीडब्ल्यूए ने उक्त विषय पर एक सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें शांति और सुरक्षा, विकास, मानवाधिकार, मानवीय सहायता, विकास सहयोग आदि जैसे विदेश नीति के मुद्दों पर लैंगिक परिप्रेक्ष्य लागू करने की आवश्यकता पर चर्चा की गई। उन्होंने यह भी कहा कि नेतृत्व में महिलाओं की आवाज शांति, स्थिरता और विकास को बनाए रखने तथा अंतर्राष्ट्रीय मानदंड-निर्धारण और संवाद के एजेंडे को आकार देने के लिए महत्वपूर्ण है। चल रहे संघर्षों को देखते हुए, महिलाओं की शांति और सुरक्षा के एजेंडे को लागू करने के प्रयास अब पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। महिलाओं की शांति और सुरक्षा के मुद्दे पर, उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि डब्ल्यूपीएस एजेंडे की बौद्धिक अर्थव्यवस्था में वैश्विक उत्तर की आवाजें भारी मात्रा में शामिल हैं, और मैडम अल्बर्ट की आवाज दक्षिण की एक महत्वपूर्ण आवाज है। संबंधित क्षेत्रों से अद्वितीय दृष्टिकोण सामने लाना आवश्यक है।

मैडम डेलिया डोमिंगो अल्बर्ट ने निमंत्रण के लिए आईसीडब्ल्यूए को धन्यवाद दिया और बताया कि अतीत में कई यात्राओं के बाद, पहले एक राजनयिक के रूप में, फिर एक मंत्री के रूप में और अब एक निजी नागरिक और फिलीपीन रेमन मैग्सेसे पुरस्कार फाउंडेशन के न्यासी बोर्ड के सदस्य के रूप में, वे पुनः भारत आकर बहुत प्रसन्न हैं। उन्होंने बताया कि 50 वर्ष पहले, उन्होंने पूर्वी यूरोप के साथ संबंध स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, क्योंकि उन्होंने लौह पर्दे के पीछे पहली पोस्ट खोली थी। 1972 तक फिलीपींस का पूर्वी यूरोप के साथ कोई संबंध नहीं था। उन्होंने 1967 में राजनयिक सेवाओं में शामिल होने का भी उल्लेख किया और बताया कि वह आसियान (उस समय एएसएसए) के गठन की गवाह थीं, जिसमें पाँच देश, अर्थात् इंडोनेशिया, सिंगापुर, फिलीपींस, मलेशिया और थाईलैंड पहल कर रहे थे। इन पाँचों देशों के नेता गोल्फ के प्रति जुनूनी थे और इस साझा रुचि ने विश्वास निर्माण की प्रक्रिया में मदद की: "आज तक, गोल्फ वह गोंद है जो आसियान को एक साथ रखता है।" उन्होंने आसियान के गठन, इसके मूल सिद्धांतों, संगठन के भीतर गतिशीलता, आसियान के भीतर फिलीपींस की भूमिका, आसियान-भारत संबंध, भारत-आसियान संबंधों में फिलीपींस का योगदान और शांति एवं सुरक्षा में महिलाओं की भूमिका सहित अन्य मुद्दों पर बात की।

भारत-यूरोपीय संघ सीएएमएम II के अंतर्गत छात्र गतिशीलता पर कार्यशाला, 10 सितंबर 2024

यूरोपीय संघ-भारत गलियारे के भीतर सुरक्षित, कानूनी और अच्छी तरह से समर्थित छात्र गतिशीलता की सुविधा के लिए, आईसीडब्ल्यूए ने परियोजना भागीदारों अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन नीति विकास केंद्र और अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, भारत के साथ मिलकर नई दिल्ली में "छात्र गतिशीलता को सुविधाजनक बनाने और शैक्षिक सलाहकारों के उपयोग पर कार्यशाला" का आयोजन किया। आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर ने विदेश मंत्रालय की संयुक्त सचिव (ईपी एंड डब्ल्यू) अर्चना नायर, भारत में यूरोपीय संघ के प्रतिनिधिमंडल के मंत्री परामर्शदाता-सहकारिता प्रमुख फ्रेंक वियाल्ट के साथ उद्घाटन भाषण दिया। आईसीडब्ल्यूए ने पैनल चर्चाओं को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें शिक्षा मंत्रालय, एडसीआईएल और एनआईईपीए के उच्च-स्तरीय प्रतिनिधित्व शामिल थे। पीपीआरओईईडी और जम्बूरी के भारतीय शैक्षिक सलाहकारों ने भी छात्र गतिशीलता में अवसरों और चुनौतियों पर चर्चा को समृद्ध किया।

नई दिल्ली में रूसी हाउस की प्रमुख और निदेशक डॉ. एलेना रेमीज़ोवा और मुंबई में रूसी हाउस के आगामी प्रमुख विक्टर गोरेलिख ने आईसीडब्ल्यूए के अपर सचिव से मुलाकात की, 12 सितंबर 2024

नई दिल्ली में रूसी हाउस की प्रमुख और निदेशक डॉ. एलेना रेमीज़ोवा ने संस्थागत सहयोग पर चर्चा करने के लिए आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर से मुलाकात की। उनके साथ मुंबई में रूसी हाउस के आगामी प्रमुख विक्टर गोरेलिख भी थे।

अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन संगठन (आईओएम) के विकास कोष की प्रशासक एलेसिया कास्टेलफ्रैंको ने आईसीडब्ल्यूए के अपर सचिव से मुलाकात की, 12 सितंबर 2024

अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन संगठन (आईओएम) के विकास कोष की प्रशासक एलेसिया कास्टेलफ्रैंको ने आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर से सप्रू हाउस में मुलाकात की, जिसमें युवाओं और कुशल पेशेवरों के लिए नियमित और सहायता प्राप्त प्रवासन को बढ़ावा देने वाली परियोजना (प्रयास) सहित आईसीडब्ल्यूए और आईओएम के बीच चल रहे सहयोग पर चर्चा और समीक्षा की गई। अपर सचिव ने उन्हें आईसीडब्ल्यूए में प्रवासन, गतिशीलता और प्रवासी अध्ययन केंद्र (सीएमएमडीएस) के कामकाज के बारे में भी जानकारी दी।

हिंदी दिवस 2024, 14-15 सितंबर 2024

निदेशक (प्रशासन) श्री आनंद प्रकाश के नेतृत्व में भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए) के पाँच सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 14-15 सितंबर, 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में हिंदी दिवस-2024, चौथे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन और हीरक जयंती वर्ष समारोह में भाग लिया। प्रतिनिधिमंडल में वरिष्ठ शोध अध्येता डॉ. संजीव कुमार, वरिष्ठ शोध अध्येता डॉ. अतहर जफर, रेणु पवार और डॉ. शशि रावत भी शामिल थे।

"भविष्य पर संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन" पर पूर्वावलोकन संगोष्ठी, 19 सितंबर 2024

भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए) ने 19 सितंबर, 2024 को सप्रू हाउस में भविष्य के संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन पर एक पूर्वावलोकन संगोष्ठी का आयोजन किया। शिखर सम्मेलन के दो व्यापक विषयों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें भविष्य की संधि की प्राथमिकताएँ शामिल थीं, जो थे सतत विकास और वैश्विक शासन में परिवर्तन। इस सेमिनार में पूर्व राजनयिकों, शिक्षाविदों, विशेषज्ञों, भारतीय विश्वविद्यालयों और थिंक टैंकों के विद्वानों ने भाग लिया। अपने स्वागत भाषण में, आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव, नूतन कपूर महावर ने ध्रुवीकरण, संघर्ष और असुरक्षा के वर्तमान वैश्विक माहौल को देखते हुए, 22-23 सितंबर, 2024 को होने वाले आगामी संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन में नवीकृत बहुपक्षवाद की महत्वपूर्ण आवश्यकता को रेखांकित किया। उन्होंने शिखर सम्मेलन के तीन प्रमुख परिणाम दस्तावेजों की रूपरेखा प्रस्तुत की: भविष्य के लिए समझौता, भावी पीढ़ियों पर घोषणापत्र और वैश्विक डिजिटल समझौता, जिनका उद्देश्य दबावपूर्ण वैश्विक चुनौतियों का समाधान करना है। अंतर-पीढ़ीगत एकजुटता के महत्व तथा सभी पीढ़ियों के लिए समावेशी और टिकाऊ भविष्य सुनिश्चित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया।

सतत विकास पर पहले सत्र की अध्यक्षता संयुक्त राष्ट्र में पूर्व राजदूत/डीपीआर और प्रमुख जलवायु परिवर्तन वार्ताकार तथा वर्तमान में टेरी के प्रतिष्ठित अध्येता, राजदूत मंजीव पुरी ने की। वक्ताओं में डीपटेक फॉर भारत फाउंडेशन के सह-संस्थापक शशि शेखर वेम्पति, पूर्व सीईओ - प्रसार भारती (डीडी एंड एआईआर), डॉ. अजय लेले (सेवानिवृत्त), उप महानिदेशक, एमपी-आईडीएसए, डॉ. शैली केडिया, एसोसिएट निदेशक, सतत विकास और आउटरीच, टेरी शामिल थे।

प्रथम सत्र में वक्ताओं ने टिकाऊ साधनों के माध्यम से 2047 तक "विकसित भारत" के लक्ष्य को प्राप्त करने के महत्व पर बल दिया। व्यक्तिगत राष्ट्रों, विशेषकर वैश्विक दक्षिण के देशों के भाग्य का निर्धारण करने में वैश्विक शासन की भूमिका की ओर ध्यान आकर्षित किया

गया। इसने सतत विकास लक्ष्यों की समय पर प्राप्ति में तेजी लाने पर संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन के फोकस का समर्थन किया। इसमें देरी के कारणों पर विस्तार से चर्चा की गई, जैसे कि कोविड-19 महामारी और वर्तमान संघर्ष, तथा बहुपक्षवाद के केंद्रीय उद्देश्य के रूप में सतत विकास लक्ष्य की पूर्ति पर सामूहिक ध्यान केंद्रित करने का आह्वान किया गया। इस अवसर पर भारत द्वारा असंख्य घरेलू प्रयासों के अलावा, अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए), आपदा प्रतिरोधी अवसंरचना के लिए गठबंधन (सीडीआरआई) और वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन (जीबीए) जैसी विभिन्न वैश्विक जलवायु-अनुकूल पहलों के माध्यम से भारत के योगदान पर प्रकाश डाला गया।

एआई जैसी नई और उभरती प्रौद्योगिकियों की नैतिकता और जोखिम पर चर्चा की गई, साथ ही उनके उपयोग पर विनियमन और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहमत मानदंडों की आवश्यकता पर बल दिया गया। यह सुनिश्चित करने के लिए कि एआई का विकास समावेशी हो और इसके परिणामस्वरूप स्थायी आजीविका हो, सार्वजनिक रूप से सुलभ डेटासेट की आवश्यकता पर ध्यान दिया गया। जलवायु परिवर्तन के संबंध में, सीओपी29 में वैश्विक दक्षिण की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए एक नया सामूहिक परिमाणित लक्ष्य या जलवायु वित्त लक्ष्य निर्धारित करने की आवश्यकता पर बल दिया गया। सत्र I में हुई चर्चा का समापन सामुदायिक लचीलेपन और नैतिक अखंडता को सुदृढ़ करने तथा पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौतियों का सामना करने के लिए नवीन समाधानों का लाभ उठाने के आह्वान के साथ हुआ। वैश्विक शासन में परिवर्तन विषय पर आयोजित दूसरे सत्र की अध्यक्षता संयुक्त राष्ट्र में भारत के पूर्व स्थायी प्रतिनिधि राजदूत अशोक कुमार मुखर्जी ने की। वक्ताओं में जेएनयू के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज के पूर्व प्रोफेसर (सेवानिवृत्त) डॉ. सीएसआर मूर्ति, शिव नादर विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज के डीन डॉ. रजत कथूरिया और जेएनयू के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अर्चना नेगी शामिल थे।

वक्ताओं ने दो मुख्य क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए सुधारित बहुपक्षवाद के लिए भारत के आह्वान पर जोर दिया: वैश्विक शासन के लिए मानव-केंद्रित दृष्टिकोण और वैश्विक शासन निर्णयों में भारत की भागीदारी की आवश्यकता। यह उल्लेख किया गया कि वैश्विक शासन और बहुपक्षवाद के केंद्र में मानव-केंद्रित ध्यान केंद्रित करना भारत की, जब से वह संयुक्त राष्ट्र का संस्थापक सदस्य बना है, सतत नीति रही है। जी-20 जैसे हाल के बहुपक्षीय निकायों के विपरीत, यह बताया गया कि संयुक्त राष्ट्र प्रणाली संधियों पर आधारित है जो देशों की ओर से उच्च स्तर की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह भी उल्लेख किया गया कि प्रत्येक अच्छी संधि में समीक्षा का प्रावधान होता है, संयुक्त राष्ट्र चार्टर का अनुच्छेद 109 ऐसा ही प्रावधान है जिस पर विचार किए जाने की आवश्यकता है। अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के मुद्दों पर बहु-हितधारक दृष्टिकोण अपनाने से उत्पन्न चुनौतियों का उल्लेख किया गया था।

सत्र II में इस बात पर जोर दिया गया कि अनियंत्रित बाजारों से कार्यकुशलता और कल्याण में वृद्धि नहीं हुई है। प्रभावी प्रवर्तन क्षमता के साथ नियम-आधारित बाजार प्रणाली की माँग की गई। सत्र में अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं, जैसे आईएमएफ, में सुधार की आवश्यकता, संगठन की संस्कृति में परिवर्तन तथा विकासशील देशों के लिए कोटा बढ़ाने पर चर्चा की गई। चर्चा में विश्व व्यापार संगठन के कामकाज में ठहराव के संकेतों पर प्रकाश डाला गया, जिसमें मुक्त-उदार व्यापार पर आधारित विश्वसनीयता का संकट और विवाद निपटान प्रणाली का संकट शामिल है।

कुल मिलाकर, संगोष्ठी में आशा व्यक्त की गई कि, चल रहे भू-राजनीतिक बदलावों के बीच, भविष्य का संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन राष्ट्रों के बीच सार्थक संवाद और सहयोग को बढ़ावा दे सकता है, जिससे अंततः वैश्विक चुनौतियों के लिए प्रभावशाली समाधान निकलेंगे, तथा संयुक्त राष्ट्र महासचिव द्वारा बताए गए अनुसार सभी पक्षों में समझौते की भावना की आवश्यकता पर बल दिया गया।

आईसीडब्ल्यूए में हिंदी पखवाड़ा 2024, 26 सितंबर 2024

हिंदी दिवस और हिंदी के राजकीय भाषा बनने के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 26 सितंबर 2024 को भारतीय वैश्विक परिषद, सप्रू हाउस में एक स्मृति समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आईसीडब्ल्यूए की अपर सचिव नूतन कपूर महावर ने की। इस कार्यक्रम के मुख्य आकर्षणों में हिंदी विषय पर चार श्रेणियों में प्रतियोगिताएँ, "राष्ट्रीय एकता में हिंदी की भूमिका" पर चर्चा और प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता शामिल थी। इस कार्यक्रम में अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखी गई।

वियतनाम सामाजिक विज्ञान अकादमी (वीएएसएस), हनोई, वियतनाम और भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए) के बीच पाँचवीं वार्ता, 27 सितंबर 2024

5वीं भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए)-वियतनाम सामाजिक विज्ञान अकादमी (वीएएसएस) वार्ता 27 सितंबर, 2024 को हनोई, वियतनाम में आयोजित की गई। वार्ता का विषय था 'नई विश्व व्यवस्था में भारत और वियतनाम'।

संवाद में उद्घाटन भाषण के बाद चार सत्र हुए। सत्रों का विषय था "नई विश्व व्यवस्था में भारत और भारत-वियतनाम सहयोग के अवसर"; "नई विश्व व्यवस्था में वियतनाम और वियतनाम-भारत सहयोग के अवसर"; "नई विश्व व्यवस्था में वियतनाम व्यापक रणनीतिक साझेदारी: सुरक्षा और रक्षा, व्यापार और निवेश, विज्ञान प्रौद्योगिकी और नवाचार" और "नई विश्व व्यवस्था में भारत-वियतनाम व्यापक रणनीतिक

साझेदारी: पर्यटन, शिक्षा, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और लोगों से लोगों के बीच संबंध"।

वियतनामी प्रतिनिधिमंडल का प्रतिनिधित्व वीएएसएस के उपाध्यक्ष डॉ. गुयेन डुक मिन्ह, भारत में वियतनाम के पूर्व राजदूत डॉ. टोन सिन्ह थान, वीएएसएस में दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन संस्थान के प्रभारी उप महानिदेशक डॉ. वो जुआन विन्ह, डॉ. फाम आन्ह तुआन, कार्यवाहक महानिदेशक, वियतनाम अर्थशास्त्र संस्थान, वीएएसएस, डॉ. फान काओ नहत आन्ह, उप महानिदेशक, दक्षिण एशियाई, पश्चिम एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन संस्थान, वीएएसएस और डॉ. ले थी हांग नगा, दक्षिण एशियाई, पश्चिम एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन संस्थान, वीएएसएस ने किया।

भारतीय प्रतिनिधिमंडल का प्रतिनिधित्व आईसीडब्ल्यूए के कार्यवाहक महानिदेशक राजदूत सौमेन बागची, वियतनाम में भारत के राजदूत, राजदूत संदीप आर्य, डॉ. राहुल मिश्रा, एसोसिएट प्रोफेसर, जवाहर नेहरू विश्वविद्यालय, डॉ. टेम्जेनमेरेन एओ, शोधकर्ता, मनोहर पर्रिकर रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (एमपी-आईडीएसए), प्रो. डॉ. प्रबीर डे, विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली (आरआईएस) और डॉ. श्रीपति नारायणन, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए ने किया।

संवाद के दौरान चर्चा में यह बात सामने आई कि भारत का उदय दुनिया के साथ सामंजस्य बिठाने वाला है। विकासशील देशों की चिंताओं को दूर करने के मामले में भारत वैश्विक दक्षिण को नेतृत्व प्रदान कर रहा है। यह भी बताया गया कि भारत और वियतनाम दोनों का उद्देश्य अपने-अपने देशों और अपने लोगों के लिए महत्वपूर्ण आर्थिक प्रगति देखना है।

आउटरीच कार्यक्रम

आर.सी.ए. गर्ल्स (पी.जी.) कॉलेज, मथुरा में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (हिंदी में), 6-7 सितंबर 2024

भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए), नई दिल्ली और आरसीए गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश के सामाजिक विज्ञान संकाय के संयुक्त तत्वावधान में 6 और 7 सितंबर को "इंडो-पैसिफिक क्षेत्र: अवसर और चुनौतियाँ "विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह सेमिनार भारतीय वैश्विक परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित था। आईसीडब्ल्यूए का प्रतिनिधित्व डॉ. पुनीत गौड़ ने किया, जिन्होंने सेमिनार का विषय प्रस्तुत किया और हिंद-प्रशांत क्षेत्र के सामरिक महत्व पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर परिषद की नीतियों और शोध कार्यों को साझा किया। डॉ. पुनीत गौड़ ने पहले तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की और सत्र के दौरान प्रस्तुत शोध पत्रों की समीक्षा प्रस्तुत की।

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूषण, गोरखपुर द्वारा तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (हिंदी में), 7-8 सितंबर 2024

राजनीति विज्ञान विभाग, महाराणा प्रताप डिग्री कॉलेज, जंगल धूषण गोरखपुर (यूपी) ने 7-8 सितंबर 2024 को "भारतीय विदेश नीति के बदलते आयाम: 2019 से अब तक" शीर्षक से दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। यह सम्मेलन आईसीडब्ल्यूए, नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित किया गया था। डॉ. फज्जुर रहमान सिद्दीकी, एसआरएफ, आईसीडब्ल्यूए को परिषद द्वारा सम्मेलन के लिए नामित किया गया था। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थ नगर (उप्र) की कुलपति प्रोफेसर कविता शाह ने की

तथा इस अवसर पर मुख्य वक्ता बीएचयू, वाराणसी के प्रोफेसर तेज प्रताप सिंह थे। सेमिनार में दो दिनों में विभिन्न सत्र आयोजित किए गए, जिनमें भारत की विदेश नीति की बदलती गतिशीलता, बड़ी दुनिया के साथ भारत के संबंध और बढ़ती कनेक्टिविटी और वैश्विक भागीदारी में भारत की रणनीतिक स्वायत्तता को लागू करना जैसे विषयों को शामिल किया गया। सम्मेलन में कॉलेज के छात्र, विद्वान और संकाय सदस्यों ने भाग लिया। सेमिनार के समापन सत्र को नेपाल, यूरोपीय संघ, लक्जमबर्ग में भारत के पूर्व राजदूत तथा संयुक्त राष्ट्र में भारत के उप स्थायी प्रतिनिधि, राजदूत मंजीव सिंह पुरी ने संबोधित किया।

महिला महाविद्यालय (पीजी), कानपुर द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, 20-21 सितंबर 2024

महिला महाविद्यालय पीजी कॉलेज के समाजशास्त्र विभाग ने भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए) के सहयोग से 20 और 21 सितंबर को कानपुर के महिला महाविद्यालय सेमिनार हॉल में "आसियान-भारत: युवा और सामाजिक-सांस्कृतिक संपर्क" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में परिषद का प्रतिनिधित्व शोधकर्ता डॉ. अन्वेषा घोष ने किया।

आईसीडब्ल्यूए में शोध-प्रशिक्षु

मधु श्री
आईजीएनटी विश्वविद्यालय

जूलिया जोस थाचिल
गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय

विजय आनंद पाणिग्रही
पांडिचेरी विश्वविद्यालय

अदिति मिश्रा
पांडिचेरी विश्वविद्यालय

नंदिनी खंडेलवाल
पांडिचेरी विश्वविद्यालय

मृत्युंजय गोस्वामी
जिंदल स्कूल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स

शिवम कुमार
राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय

शताक्षी त्यागी
राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय

मोहम्मद जुल्फिकार फिरोज पठान
राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय

सुगंधी
जामिया मिलिया इस्लामिया

एड्डुला वर्षिता
पांडिचेरी विश्वविद्यालय

कुशाग्र कुशवाह
मणिपाल विश्वविद्यालय

अबोन गुप्तु
मणिपाल विश्वविद्यालय

सौरव द्रास
मणिपाल विश्वविद्यालय

आर अजितेश
मणिपाल विश्वविद्यालय

दहगम मनस्विनी श्रीवास्तव
मणिपाल विश्वविद्यालय

मार्शलिन मैथ्यू
मणिपाल विश्वविद्यालय

अश्मिता दत्ता
मणिपाल विश्वविद्यालय

पी रामकृष्ण तेजा
मणिपाल विश्वविद्यालय

दीया चौधरी
शिव नादर विश्वविद्यालय

गायत्री सिंह
शिव नादर विश्वविद्यालय

भारतीय वैश्विक परिषद प्रकाशन

मुद्दा संक्षिप्त

1. एफआरसीवी परियोजना: भारत के शस्त्र आधुनिकीकरण को बढ़ावा देने का दृष्टिकोण, मुकेश कुमार, 30 सितंबर 2024
2. अफ़गानिस्तान में मानवीय दुविधा को समझना, डॉ. अन्वेषा घोष, 30 सितंबर 2024
3. उत्तर कोरिया और संयुक्त राष्ट्र, डॉ. टुनचिनमंग लैंगल, 20 सितंबर 2024
4. श्रीलंका के राष्ट्रपति चुनाव में मुख्य मुद्दे और संभावित परिणाम, डॉ. समथा मल्लेमपति, 20 सितंबर 2024
5. बलूचिस्तान: एक उबलती कड़ाही, डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्जी, 18 सितंबर 2024
6. सीरिया में एक दशक के गृहयुद्ध के बीच फलता-फूलता ड्रग साम्राज्य: एक आकलन, डॉ. फ़ज़ुर रहमान सिद्दीकी, 13 सितंबर 2024
7. अमेरिका-बांग्लादेश संबंधों में बदलाव, डॉ. स्तुति बनर्जी, 10 सितंबर 2024
8. किशिदा का पद छोड़ना: जापान का राजनीतिक परिदृश्य, डॉ. टुनचिनमंग लैंगल, 10 सितंबर 2024
9. मध्य एशिया के बदलते भू-राजनीतिक परिदृश्य को नेविगेट करते हुए, डॉ. पुनित गौड़, 02 सितम्बर 2024
10. 2024 पेरिस ओलंपिक खेल: प्रमुख खेल आयोजनों में स्थिरता की वकालत, विजय आनंद पाणिग्रही, 02 सितंबर 2024
11. वेनेजुएला में राष्ट्रपति चुनाव और उथल-पुथल, डॉ. स्तुति बनर्जी, 29 अगस्त 2024
12. अफ़गानिस्तान में तालिबान शासन के तीन साल, डॉ. अन्वेषा घोष, 13 अगस्त 2024
13. बोलीविया में राजनीतिक और आर्थिक संकट, डॉ. अर्नब चक्रवर्ती, 13 अगस्त 2024
14. नाटो के 75 वर्ष: ट्रांस-अटलांटिक गठबंधन का यूरोपीय स्तंभ, अमन कुमार, 06 अगस्त 2024
15. यूक्रेन की रक्षा बढ़ाने की दिशा में यूरोपीय संघ के प्रयास: यूरोप के सैन्य-औद्योगिक परिसर के लिए निहितार्थ, दीया चौधरी, 05 अगस्त 2024
16. यूक्रेन युद्ध के मद्देनजर चीन-रूस संबंधों में उभरते रुझान, डॉ. तेशु सिंह, 02 अगस्त 2024
17. कुरील द्वीप विवाद का हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर प्रभाव, आर. अजितेश, 29 जुलाई 2024
18. भारत और मध्य एशियाई गणराज्यों के बीच सुरक्षा सहयोग, सौरव दास, 26 जुलाई 2024
19. मसूद पेज़ेशकियान और ईरान का भविष्य, कुशाग्र कुशवाह, 26 जुलाई 2024
20. कैरेबियन में चीन: उपस्थिति मायने रखती है, अबोन गुप्तू, 25 जुलाई 2024
21. राष्ट्रपति जो बाइडेन का आव्रजन पर कार्यकारी आदेश: अपेक्षाएँ और चुनौतियाँ, मार्शलिन मैथ्यू, 24 जुलाई 2024
22. ईरानी दृष्टिकोण III: कनेक्टिविटी के माध्यम से जुड़ना, डॉ. लक्ष्मी प्रिया, 15 जुलाई 2024
23. बोगेनविले की स्वतंत्रता की खोज: गतिरोध और भविष्य, डॉ. प्रज्ञा पांडे, 05 जुलाई 2024
24. यूरोपीय संसद में अति-दक्षिणपंथी और यूरोप के लिए उनका एजेंडा, अमन कुमार, 04 जुलाई 2024
25. तूफान के लिए तैयारी: यूरोपीय संघ के आम चुनाव 24 में प्रवासन एक धुरी के रूप में कार्य करता है, एंबी, 04 जुलाई 2024
26. 2024 में लैटिन अमेरिका में प्रमुख आर्थिक रुझान, डॉ. अर्नब चक्रवर्ती, 03 जुलाई 2024
27. श्रीलंका में 2024 के राष्ट्रपति चुनाव पर बहस पर एक नज़र, डॉ. समथा मल्लेम्पति, 03 जुलाई 2024

दृष्टिकोण

1. एक नया आख्यान तैयार करना: बांग्लादेश में इतिहास और राजनीति का पुनर्लेखन, डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्य, 26 सितंबर 2024
2. ईरान और इज़राइल के बीच मनोवैज्ञानिक युद्ध, डॉ. लक्ष्मी प्रिया, 25 सितंबर 2024
3. केन्या और नाइजीरिया में युवाओं के नेतृत्व में नागरिक अशांति: संयोग या संक्रामक रोग?, डॉ. गौरी नारायण माथुर, 25 सितंबर 2024
4. एकता का एक नया युग: संयुक्त राष्ट्र महासभा में कैमरून की अध्यक्षता, नंदिनी खंडेलवाल, 20 सितंबर 2024
5. संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा हिंद महासागर क्षेत्र में द्वीप भ्रमण, डॉ. श्रीपति नारायणन, 11 सितंबर 2024
6. हालिया उच्चस्तरीय यात्रा: भारत-नेपाल संबंधों को पुनर्जीवित करना, सुबोध चंद्र भारती, 11 सितंबर 2024
7. भारतीय नौसेना की बढ़ती ताकत भारत की व्यापक समुद्री रणनीति का अनुपूरक होना, डॉ. प्रज्ञा पांडे, 11 सितंबर 2024
8. चीनी सॉफ्ट पावर प्रोजेक्शन: दक्षिण एशिया में कन्फ्यूशियस संस्थानों की भूमिका, शिवम कुमार, 06 सितंबर 2024
9. भारत का सफल एसएसएलवी प्रक्षेपण: अंतरिक्ष अन्वेषण में एक नया मील का पत्थर, केशव वर्मा, 06 सितंबर 2024
10. क्षेत्रीय सहयोग तंत्र बनाने के लिए मध्य एशियाई नेताओं का शिखर सम्मेलन, डॉ. अतहर ज़फ़र, 30 अगस्त 2024
11. भारत-ऑस्ट्रेलिया समुद्री सहयोग: हिंद-प्रशांत क्षेत्र में मजबूत साझेदारी को मजबूत करना, डॉ. प्रज्ञा पांडे, 30 अगस्त 2024
12. भारत-जापान 2+2 विदेश और रक्षा मंत्रिस्तरीय बैठक, डॉ. टुनचिनमंग लांगेल, 27 अगस्त 2024
13. फिलीपींस और वियतनाम समुद्री सहयोग: क्या यह दक्षिण चीन सागर परिदृश्य को बदल देगा? डॉ. श्रीपति नारायणन, 27 अगस्त 2024
14. प्रिगोझिन के बिना एक साल: यूक्रेन और अफ्रीका में वैगनर समूह का क्या हुआ? अमन कुमार, 27 अगस्त 2024
15. लाल सागर में हौथी हमले और मिस्र में गहराते आर्थिक संकट, डॉ. फ़ज़ूर रहमान सिद्दीकी, 19 अगस्त 2024
16. जापान-श्रीलंका हालिया द्विपक्षीय जुड़ाव: एक अवलोकन, डॉ. समथा मल्लेम्पति, 13 अगस्त 2024
17. यूरोपीय संघ-मिस्र निवेश सम्मेलन: एक आकलन, डॉ. अरशद, 07 अगस्त 2024
18. चाड में नई सरकार: विदेश नीति दृष्टिकोण और प्राथमिकताएँ, डॉ. गौरी नारायण माथुर, 06 अगस्त 2024
19. भारत-जापान सेमीकंडक्टर आपूर्ति श्रृंखला साझेदारी, गायत्री सिंह, 06 अगस्त 2024
20. संक्रमण का मार्ग: बांग्लादेश की अंतरिम सरकार और उसकी विदेश नीति की चुनौतियाँ, मधु श्री द्विवेदी, 06 अगस्त 2024
21. नाटो अपने हिंद-प्रशांत साझेदारों के साथ संबंधों को मजबूत कर रहा है, डॉ. स्तुति बनर्जी, 02 अगस्त 2024
22. श्रीलंका ऋण उपचार समझौते: घरेलू प्रतिक्रिया, डॉ. समथा मल्लेम्पति, 29 जुलाई 2024
23. थाईलैंड की खाड़ी: वर्तमान भूराजनीतिक परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता, डी मनस्विनी श्रीवात्सव, 26 जुलाई 2024
24. कहां है यूरोपीय ग्रीन डील? पी राम कृष्ण तेजा, 25 July 2024
25. यूक्रेन को यूरोप की सैन्य सहायता – 2022 से, अशमिता दत्ता, 25 जुलाई 2024
26. अंतरिक्ष डोमेन जागरूकता में भारतीय अंतरिक्ष क्षेत्र की उभरती भूमिका, केशव वर्मा, 16 जुलाई 2024
27. भारत-बांग्लादेश हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सहयोग बढ़ा रहे हैं, डॉ. प्रज्ञा पांडे, 16 जुलाई 2024
28. ऑपरेशन आज़म-ए-इस्तेहकम: एक आकलन, डॉ. श्राबना बरुआ, 09 जुलाई 2024
29. रामफोसा 2.0: गठबंधन सरकार और भविष्य के निहितार्थ, डॉ. गौरी नारायण माथुर, 04 जुलाई 2024

विशेष रिपोर्ट

1. राष्ट्रपति डैनियल ऑर्टेगा के तहत निकारागुआ की विदेश नीति: पश्चिम का मुकाबला, डॉ. अर्नब चक्रवर्ती, 20 सितंबर 2024
2. छोटे खाड़ी देशों की बदलती विदेश नीति: बहरीन की एक केस स्टडी, डॉ. लक्ष्मी प्रिया, 02 सितंबर 2024
3. नेपाल के एलडीसी स्नातक के निहितार्थ, सुबोध चंद्र भारती, 19 अगस्त 2024
4. विकासशील भू-राजनीतिक परिदृश्य में कजाकिस्तान की 'मल्टी-वेक्टर' विदेश नीति को संचालित करना, डॉ. पुनीत गौर, 09 जुलाई 2024

आईसीडब्ल्यूए अतिथि कॉलम

1. 'दिवंगत श्री शिंजो आबे के निधन पर दो समुद्रों के पार शोक', केई हाकाटा और जगन्नाथ पी. पांडा, 01 जुलाई 2024

भारतीय वैश्विक परिषद पुस्तकें

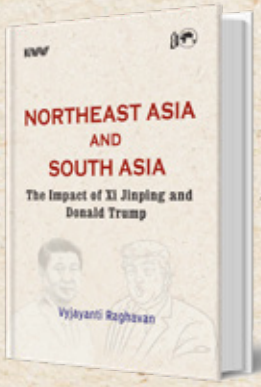

Northeast Asia and South Asia: The Impact of Xi-Jinping and Donald Trump

By Prof. Vyjayanti Raghavan

(July 2024)

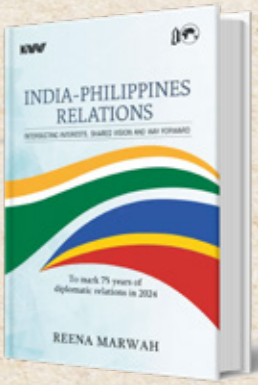

India-Philippines Relations: Intersecting Interests, Shared Vision and Way Forward

By Prof. Reena Marwah

(August 2024)

IORA's Sustainable Development Objective(s) and United Nations Sustainable Development Goals (17 SDGs): Through Global Partnership

By Prof. V. N. Attri

(September 2024)

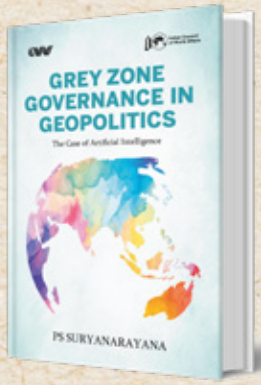

Grey Zone Governance in Geopolitics: The Case of Artificial Intelligence

By Mr. P. S. Suryanarayana

(September 2024)

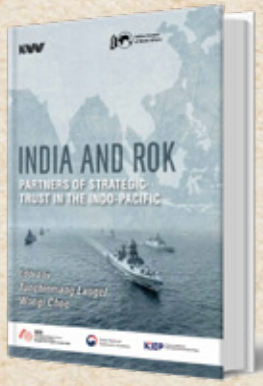

India And RoK: Partners of Strategic Trust in The Indo-Pacific

Edited by Dr. Tunchinmang Langel & Wongi Choe

(September 2024)

इण्डिया क्वार्टरली, ए जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स
खंड 80, अंक 3, दिसंबर 2024

संपादकीय

हमारे आस-पास असंतोष का माहौल है। फिर भी, जैसा कि दुनिया नियंत्रण से बाहर होती दिख रही है, संभावित खतरनाक स्थितियों के समाधान की तलाश में अधिक प्रयास हो रहे हैं। फिलिस्तीन में मची तबाही ने अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय जैसी वैश्विक संस्थाओं पर पुनः ध्यान केंद्रित कर दिया है, तथा दक्षिण अफ्रीका, नॉर्वे, आयरलैंड और स्पेन जैसी मध्यम शक्तियों ने वैश्विक नीति में युद्ध की नैतिकता और वैश्विक जनमत को मानवीय मूल्यों के इर्द-गिर्द मजबूत करने के लिए जगह बना ली है। कई मायनों में, वैश्विक दक्षिण अधिक वैश्विक है, लेकिन यह केवल दक्षिण नहीं है, क्योंकि उत्तर के राज्य पश्चिमी नीति के मूल सिद्धांतों से अलग हो रहे हैं। ऐतिहासिक उत्पीड़न और वर्तमान महत्वाकांक्षाओं के बीच का धर्माधर्म विचारक संबंध, जो दूसरों से भूमि, आजीविका के अधिकार और मानव सम्मान छीनने का समर्थन करता है, अब दुनिया भर के अधिकांश देशों में स्वीकार्य नहीं रह गया है। विकास और सुरक्षा से जुड़े मुद्दे वैश्विक और राष्ट्रीय बहस के केंद्र में बने हुए हैं, क्योंकि सरकारें अपनी जनता को अधिक सुरक्षित, समृद्ध और आगामी चुनौतियों के लिए सुसज्जित बनाने का प्रयास कर रही हैं, महत्वपूर्ण बात यह है कि कोविड-19 और यूक्रेन-रूस युद्ध तथा अब गाजा में युद्ध के झटके राष्ट्रीय औद्योगिक नीतियों, वि-वैश्वीकरण, वियुग्मन और वि-जोखिम के लिए तर्क प्रदान करते हैं, लेकिन जैसा कि इस अंक में एक लेखक ने तर्क दिया है कि मौजूदा वैश्वीकरण को पुनः संतुलित करने के लिए भी उतना ही मजबूत तर्क मौजूद है। मौजूदा आपूर्ति श्रृंखलाओं, वैश्विक निवेशों तथा समुद्री और स्थलीय संपर्कों को खत्म करना, राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए बेहतर, पारदर्शी और सहमतिपूर्ण नियामक तंत्र विकसित करने की तुलना में अधिक आर्थिक खतरे से भरा है। इस प्रकार, "भारत को वियोजन की अवधारणा को अमेरिका-चीन विलगन से अलग रूप में देखना चाहिए। उभरते तकनीकी परिदृश्य में भारत के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए, अलग होने के बजाय, चीन से चरणबद्ध तरीके से विविधीकरण करना महत्वपूर्ण पाया गया है।" विश्व व्यापार संगठन के कोमा की स्थिति में होने के कारण, अगले कदम उठाने की जिम्मेदारी क्षेत्रीय संस्थाओं और राज्यों पर आ गई है।

इंडिया क्वार्टरली के इस अंक में प्रकाशित अन्य शोधपत्र भी इनमें से कुछ चिंताओं पर प्रकाश डालते हैं। दूसरी ओर, भारत अभी भी क्षेत्रीय संपर्क और ऊर्जा सुरक्षा के लिए आवश्यक संपर्क बनाने के लिए संघर्ष कर रहा है, ये दोनों ही मुद्दे नीतिगत चिंताओं के केंद्र में हैं। जैसा कि एक लेख में बताया गया है, पूर्वोत्तर में एक्ट ईस्ट नीति ने उम्मीदों और आशंकाओं को समान रूप से बढ़ाया है। दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ संबंधों की संभावनाएं रोमांचक हैं, लेकिन रोजगार, आर्थिक विकास और बुनियादी ढांचे की स्थानीय जरूरतों को पूरा करने के लिए जमीनी स्तर पर नीति को अभी भी लंबा रास्ता तय करना है। सबसे अधिक पूछा जाने वाला प्रश्न यह है कि क्या नई दिल्ली की नीति आसियान से जुड़ने के लिए स्थानीय समुदायों को नजरअंदाज कर देगी। मध्य एशिया के तेल समृद्ध क्षेत्रों के साथ अपनी व्यापक ऊर्जा नीति में, भूगोल, भूराजनीति और अपने स्वयं के बाह्य व्यापार की दिशा भी भारतीय पहल में बाधा डालती है। यहां, ऐसा प्रतीत होता है कि नई दिल्ली भू-राजनीतिक वास्तविकताओं के साथ-साथ दक्षिण एशियाई राजनीति से भी घिरी हुई है। हालाँकि, खुली सीमाओं, भूमि और समुद्री संपर्कों के अपने सुरक्षा निहितार्थ हैं। जहाँ अपेक्षाकृत खुली सीमाएँ मौजूद हैं, वहाँ "ड्रग्स, संघर्ष और शक्ति के बीच संबंध एक प्रमुख क्षेत्रीय गतिशीलता है, जिसका प्रभाव उसके पड़ोसियों और उससे आगे तक पड़ता है", जैसा कि एक लेखक लिखते हैं। इस प्रकार, म्यांमार में संघर्ष ने न केवल भारत के पूर्वोत्तर के माध्यम से, बल्कि पश्चिम बंगाल-बांग्लादेश सीमा के माध्यम से भी एम्फेटामाइन की तस्करी को बढ़ावा दिया है, तथा अन्य प्रतिबंधित उत्पादों की तस्करी के लिए मौजूदा चैनलों का उपयोग किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, भारतीय तट, अनेक समुद्री मार्गों से जुड़ा होने के कारण, रेडियोलॉजिकल और परमाणु तस्करी के प्रति अधिक संवेदनशील है, जिसका आपराधिक और आतंकवादी तत्वों द्वारा दुरुपयोग तथा राष्ट्रीय सुरक्षा पर प्रभाव पड़ सकता है। जैसे-जैसे वैश्विक ध्यान यूरोप के युद्धों पर केंद्रित होता जा रहा है, अन्य जगहों पर बड़े संकटों को नजरअंदाज किया जा रहा है। सूडान में संघर्ष एक रोकी जा सकने वाली मानवीय आपदा की ओर बढ़ रहा है। पूरे महाद्वीप में, पश्चिम अफ्रीका की प्रमुख शक्ति नाइजीरिया, बढ़ती सीमा-पार अपराधों से जूझ रहा है, जिससे उसकी क्षेत्रीय एकीकरण नीतियाँ पटरी से उतर रही हैं और अत्यंत आवश्यक क्षेत्रीय विकास में बाधा उत्पन्न हो रही है। भले ही यूक्रेन और इजरायल को अधिक सैन्य और सहायता संसाधन मिल रहे हों, वैश्विक दक्षिण को अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए।

प्रो. मधु भल्ला
संपादक, भारत त्रैमासिक

भारतीय वैश्विक परिषद के बारे में

भारतीय वैश्विक परिषद (ICWA) की स्थापना 1943 में सर तेज बहादुर सप्रू और डॉ एच.एन. कुंजरू के नेतृत्व में प्रख्यात बुद्धिजीवियों के एक समूह द्वारा की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर एक भारतीय परिप्रेक्ष्य बनाना और विदेश नीति के मुद्दों पर ज्ञान और सोच के भंडार के रूप में कार्य करना था। परिषद आज एक आंतरिक संकाय के साथ-साथ बाहरी विशेषज्ञों के माध्यम से नीति शोध करती है। यह सम्मेलनों, संगोष्ठियों, गोलमेज परिचर्चाओं, व्याख्यानों सहित बौद्धिक गतिविधियों की एक श्रृंखला नियमित रूप से आयोजित करती है और कई प्रकाशनों का प्रकाशन करती है। इसमें एक बहुत सी पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय, एक सक्रिय वेबसाइट है, और यह 'इंडिया क्वार्टरली' पत्रिका प्रकाशित करती है। अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर बेहतर समझ को बढ़ावा देने और आपसी सहयोग के क्षेत्रों को विकसित करने के लिए आईसीडब्ल्यूए ने अंतरराष्ट्रीय थिंक टैंकों और अनुसंधान संस्थानों के साथ 50 से अधिक समझौता ज्ञापन किए हैं। परिषद की भारत में अग्रणी शोध संस्थानों, थिंक टैंकों और विश्वविद्यालयों के साथ भी साझेदारी है।

सलाहकार एवं संपादक : श्रीमती नूतन कपूर महावर, अपर सचिव, आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, नई दिल्ली
प्रबंध संपादक : डॉ. निवेदिता रे, निदेशक अनुसंधान, आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, नई दिल्ली
सहायक संपादक : डॉ. ध्रुबज्योति भट्टाचार्जी, शोध अध्येता, आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, नई दिल्ली

हमसे जुड़ें

/Sapru.House
@ICWA_NewDelhi
/ICWA_NewDelhi
www.icwa.in
/company/indian-council-of-world-affairs1

आईसीडब्ल्यूए, सप्रू हाउस, बाराखंभा रोड, नई दिल्ली - 110001 द्वारा प्रकाशित समाचार पत्रक
वेबसाइट: https://www.icwa.in; दूरभाष नं 011-23317246 फैक्स नंबर 011-23310638